आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2292 • उदयपुर, शनिवार 03 अप्रेल, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने लांच किया साउंडिंग रॉकेट RH-60

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र श्रीहरिकोटा रेंज से साउंडिंग रॉकेट RH–60 को लांच किया है। इसरो इस रॉकेट लांच से न्यूट्रल विंड और प्लाज्मा गतिशीलता में व्यवहारिक भिन्नताओं का अध्ययन करेगा। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने अपने आधिकारिक अकाउंट ने ट्वीट करते हुए इसकी जानकारी दी। इसरो ने लिखा– श्रीहरिकोटा रेंज में आज तटस्थ हवाओं (न्यूट्रल विंड) और प्लाज्मा डायनामिक्स में एटिट्यूडिनल वेरिएशन का अध्ययन करने के लिए साउंडिंग रॉकेट (RH–560) लांच किया गया।

इसरो के अनुसार, ऊपरी वायुमंडलीय क्षेत्रों की जांच के लिए और अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए इस्तेमाल किए जाने एक या दो चरण वाले ठोस रॉकेट हैं। इसरो ने कहा कि वे लांच किए गए वाहनों और उपग्रहों में उपयोग के लिए नए घटकों या उप–प्रणालियों के प्रोटोटाइप का परीक्षण करने या साबित करने के लिए आसानी से किफायती प्लेटफॉर्म के रूप में भी काम करते हैं। इसरो ने 1965 से स्वदेशी रूप से निर्मित लगने वाले रॉकेट लांच करना शुरू कर दिया था और इसके बाद ठोस प्रणोदक प्रौद्योगिकी में अनुभव के साथ बहुत अधिक माहिर हो गया है।

न्यू स्पेस इंडिया करेगी 10000 करोड़ रुपये का निवेश

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की व्यावसायिक इकाई न्यू स्पेस इंडिया लि. (एनएसआईएल) ने शुक्रवार को कहा कि वह कामकाज बढ़ाने के लिए अगले पांच साल में करीब 10,000 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। इस दौरान उसे करीब 300 अतिरिक्त लोगों की भर्ती करने की जरूरत पड़ेगी। कंपनी के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक ने बंगलुरू में संवाददाताओं से कहा कि एनएसआईएल इक्विटी और कर्ज के जरिये सालाना 2,000 करोड़ रुपये जुटाएगी।

केंद्र सरकार के अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत आने वाली कंपनी ने 28 फरवरी को अपनी पहली वाणिज्यिक मिशन की शुरूआत की। इसके तहत ब्राजील का उपग्रह अमेजोनिया–1 को श्रीहरिकोटा से कक्षा में स्थापित किया गया। नारायणन ने एक सवाल के जवाब में कहा कि हम उम्मीद करते हैं कि अगले साल से सालाना करीब 2,000 करोड़ रुपये निवेश की जरूरत होगी।

एशिया का सबसे बड़ा एयरपोर्ट भारत में 2023 तक

उत्तरप्रदेश सरकार ने जेवर एयरपोर्ट को लेकर बड़ा ऐलान किया है। राज्य सरकार ने जेवर हवाई अड्डे के लिए 2,000 करोड़ का बजट दिया है। उत्तर प्रदेश के वित्त मंत्री ने बजट पेश करते समय ये ऐलान किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि सरकार ने जेवर एयरपोर्ट पर हवाई पट्टियों की संख्या 02 से बढ़ाकर 06 करने का फैसला लिया है। उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री ने जेवर हवाई अड्डे को एशिया के सबसे बड़े हवाई अड्डे के रूप में डेवलप करने की योजना बनाई है।

अयोध्या में एयरपोर्ट बनाने का मिला बजट– सरकार ने अयोध्या में बन रहे एयरपोर्ट का नाम मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम हवाई अड्डा रखने का फैसला लिया है। इसके लिए 101 करोड़ रुपए का बजट रखने की बात कही है। राज्य सरकार ने जानकारी दी कि कुशीनगर एयरपोर्ट को केंद्र सरकार ने अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट घोषित किया है। ऐसे में राज्य में जल्द ही 4 इंटरनेशनल एयरपोर्ट होंगे। इनमें लखनऊ, वाराणसी, कुशीनगर और गौतमबुद्धनगर एयरपोर्ट होंगे।

यूपी सरकार ने जेवर में एयरपोर्ट को बनाने के लिए यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण को वर्किंग एजेंसी के रूप में नियुक्त किया है। जेवर में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट विकसित करने के लिए ज्यूरिख एयरपोर्ट इंटरनेशनली एजी को चुना गया है। हवाई अड्डे का पहला चरण 1,334 हैक्टेयर में फैला होगा और इसमें 4,588 करोड़ खर्च होंगे। इसके 2023 तक पूरा होने की उम्मीद है।

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट होगा नाम– उत्तरप्रदेश में यमुना एक्सप्रेस वे के किनारे बनने वाले जेवर एयरपोर्ट का नाम तय हो गया है। मुख्यमंत्री ने देश के इस सबसे बड़े एयरपोर्ट का नाम और लोगो फाइनल कर लिया है। एयरपोर्ट के नाम को लेकर हुई एक बैठक में ये तय हुआ कि जेवर एयरपोर्ट का नाम नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट होगा।

सेवा–जगत्
नि:स्वार्थ सेवा, नारायण सेवा

सेंट्रल फेब्रिकेशन यूनिट के लिए रोटरी की ग्रांट लॉचिंग

नारायण सेवा संस्थान में रोटरी इंटरनेशनल अध्यक्ष शेखर मेहता ने दिया 1.34 करोड़ का चेक

रोटरी अन्तरराष्ट्रीय के अध्यक्ष शेखर जी मेहता ने शनिवार को नारायण सेवा संस्थान के लियो का गुड़ा स्थित सेवा महातीर्थ में प्रोस्थेटिक एवं ऑर्थोटिक सेन्ट्रल फेब्रिकेशन सेंटर की स्थापना के क्रम में ग्लोबल ग्रांट की लॉचिंग की। समारोह में विशिष्ट अतिथि रोटरी डिस्ट्रिक्ट (3054) के प्रांतपाल राजेश जी अग्रवाल, रोटरी क्लब–मेवाड़ के संरक्षक हंसराज जी चौधरी, अध्यक्ष सुरेश जी जैन, सहायक प्रांतपाल संदीप जी सिंघटवाड़िया व पूर्व अध्यक्ष निर्मल जी सिंघवी थे ।

शेखर जी मेहता ने दिव्यांगों की चिकित्सा, पुनर्वास एवं रोजगार के क्षेत्र में नारायण सेवा संस्थान की अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि रोटरी अन्तरराष्ट्रीय ने इसी से प्रभावित होकर संस्थान में 1 करोड़ 34 लाख रुपये की शुरुआती लागत से सेन्ट्रल फेब्रिकेशन सेंटर की स्थापना का निर्णय किया है। इससे दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ–पैर निःशुल्क तो मिलेंगे ही वे अत्याधुनिक भी होंगे।

जिससे दिव्यांगों की दिनचर्या और अधिक आसान हो जायेगी। उन्होंने संस्थान की कृत्रिम अंग एवं कैलिपर वर्कशॉप का अवलोकन करने के साथ ही निःशुल्क ऑपरेशन के लिए संस्थान में देश के विभिन्न भागों से आये दिव्यांगों से मुलाकात भी की।

रोटरी अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत करते हुए संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि संस्थान में रोटरी क्लब के सहयोग से दिव्यांगों के जीवन में परिर्वतनकारी बहुप्रतीक्षित योजना साकार हो रही है। इस सेंटर में अत्याधुनिक मशीनों से बनने वाले कृत्रिम अंग हादसों में अपने हाथ–पांव खो देने वालों के लिये नवजीवन का वरदान होंगे। रोटरी क्लब मेवाड़ के अध्यक्ष सुरेश जी जैन ने बताया कि इस फेब्रिकेशन सेंटर के दोनों चरणों का कार्य पूर्ण होने के बाद यह अत्याधुनिक कृत्रिम अंग निर्माण के क्षेत्र में देश का पहला सेंटर होगा।

संस्थान की कृत्रिम अंग–कैलिपर शाखा प्रभारी डॉ मानस रंजन जी साहू ने सेंटर की तकनीकी जानकारी देते हुए बताया कि इस समय प्रतिवर्ष 15 हजार दिव्यांगों को निःशुल्क कैलिपर और कृत्रिम अंग लगाए जा रहे है। सेंटर में काम शुरू होने पर गुणवत्तापूर्ण उत्पादन क्षमता कई गुणा बढ़ जाएगी, जिससे अधिकाधिक दिव्यांग लाभान्वित हो सकेंगे। समारोह में मेहता ने रोटरी क्लब मेवाड़ के सेवा कार्यों की पुस्तिका का भी विमोचन किया। संयोजन महिम जी जैन और विदेश विभाग प्रमुख रविश जी कावड़िया ने किया।

रोटरी क्लब मेवाड़ के संरक्षक हंसराज जी चौधरी ने बताया कि रोटरी क्लब ऑफ एमोरी ड्युड हिल्स (यूएसए), रोटरी इंटरनेशनल, रोटरी फाउण्डेशन तथा रोटरी क्लब ऑफ मेवाड़ के संयुक्त सहयोग से स्थापित होने वाले इस सेंटर से देश–विदेश में जरूरतमंद दिव्योंगों को कम से कम समय में कृत्रिम मोड्यूलर हाथ–पैर उपलब्ध हो सकेंगे। इस मौके पर विश्व में अत्याधुनिक कृत्रिम अंग के निर्माण में अग्रणी जर्मनी की ऑटोबॉक कम्पनी के भारत स्थित प्रतिनिधि नागेश गुर्जर को मेहता व रोटरी पदाधिकारियों ने 1 लाख 83 हजार डॉलर का चेक प्रदान किया। जो नवनिर्मित सेंटर में मशीनें और उपकरण लगाएगी।

जगदगुरु कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण को उज्जयनी के सुविख्यात विद्वान और धर्मशास्त्रों के प्रखंड पंडित ऋषि संदीपनी के पास विद्या अध्ययन के लिए भेजा गया। ऋषि संदीपनी भगवान श्रीकृष्ण और दरिद्र परिवार में जन्मे सुदामा को एक साथ बिठाकर शास्त्रों की हर प्रकार से शिक्षा देने लगे। श्रीकृष्ण गुरुदेव के यज्ञ भवन के लिए स्वयं जंगल में जाकर लकड़िया काटकर लाया करते थे। वे देखते व समझते थे कि गुरुदेव तथा उनकी पत्नी दोनों परम संतोषी हैं। श्रीकृष्ण रात के समय गुरुदेव के चरण दबाया करते और उठते ही उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद से अपने दिन का शुभारंभ करते। कई वर्ष गुरु से शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत उनकी शिक्षा पूरी हो गई। शिक्षा पूरी होने के बाद श्रीकृष्ण को ब्रज लौटना था। वह विदा लेने से पहले अपने गुरु ऋषि संदपनी के पास पहुंचे। गुरु के चरणों में बैठते हुए हाथ जोड़कर बोले कि गुरुदेव मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं दक्षिणा के रुप में आपको कुछ भेट करुं। उनकी बात सुनकर ऋषि संदीपनी ने मुसकुरा कर उसके सिर पर प्यार से हाथ रखते हुए कहा कि वत्स कृष्ण! सुनो, ज्ञान बदलें में कुछ लेने के लिए नहीं दिया जाता है। सच्चा गुरु वही है, जो शिष्य को शिक्षा के संस्कार भी देता है। मैं दक्षिणा के रुप में यह चाहता हूं कि तुम औरो को भी संस्कारित करते रहो। क्योंकि शिक्षा के दौरान ऋषि जान गए थे कि वह तो मात्र गुरु हैं, यह बालक आग चलकर 'जगद् गुरु कृष्ण' के रुप में ख्याति पाएगा। उन्होंने कहा कि वत्स मैं तुमसे यही कामना करता हूं कि तुम जब धर्मरक्षार्थ किसी का मार्ग दर्शन करो, तो उसके बदले में कभी भी कुछ स्वीकार नहीं करना। श्रीकृष्ण अपने गुरु का आदेश शिरोधार्य कर लौट आए और अपने इसी गुरु कर्म का पालन करते हुए आगे चलकर उन्होंने अर्जुन को न केवल ज्ञान दिया, अपितु उसके सारथी भी बने।

बेंगलुरू ने देश का पहला सेंट्रलाइड एसी रेल्वे टर्मिनल

भारत का पहला केंद्रीयकृत वातानुकूलित रेलवे टर्मिनल बेंगलूरू के बैयप्पनहल्ली क्षेत्र में बनकर तैयार किया है। भारत रत्न विश्ववेश्वरैय्या के नाम पर इसका नामकरण किया गया है। अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस यह टर्मिनल हवाई अड्डे जैसा नजर आता है। केंद्रीय रेल मंत्री ने इसकी जानकारी व तस्वीरें साझा की है। 42,00 वर्गमीटर में 314 करोड़ रुपए की लागत से इसका निर्माण हुआ है। यहां से हर दिन 50 ट्रेनों को संचालन हो सकेगा।

कृतज्ञता, मनुष्य की सर्वाधिक सशक्त सकारात्मक भावना

जब आप किसी को, किसी के द्वारा की गई मदद या काम के बदले धन्यवाद देते हैं तो उससे दूसरे की को खुशी और संतुष्टि तो मिलती ही है, यह स्वयं को भी फायदा पहुँचाता है। मनोवैज्ञानिकों को मानना है कि यह स्वयं के लिए, समान स्तर पर अच्छा हैं। इनके मुताबिक, हालांकि कृतज्ञता एक सकारात्मकता भावना है और इसे सब जानते है, लेकिन धन्यवाद कहने के पीछे के विज्ञान को जानने के लिए दशकों तक कोई खास प्रयास नहीं किया।

पिछले कुछ वर्षो में परीक्षण के दौरान पाया कि कृतज्ञता प्रकट करना मानवता की सबसे शक्तिशाली भावना है जो स्वयं को खुश रखती और जीवन के प्रति, विशेषतः मुश्किल दौर में, आपके रवैये को बदल सकी है। इसके अलावा मनोवैज्ञानिक इस कृतज्ञता के पीछे मस्तिष्क की रहस्यमय रासायनिक प्रक्रिया और इसे प्रदर्शित करने के सबसे अच्छे तरीके का पता लगाने का प्रयास कर रहे है।

मियामी यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर माइकल मैककुलाफ जिन्होंने इस पर अध्ययन किया, का कहना है कि कृतज्ञता जताने वाले बहुत जीवंत, सकारात्मक, सुलझे हुए,जागरूक और उत्साही प्रकृति के होते है। वे दूसरे लोगों से ज्यादा जुड़ाव महसूस करते है। लोगों द्वारा हर रोज या हर सप्ताह लिखी जाने वाली डायरियाँ जिनमें वे उन लोगों के नाम लिखते हैं, जिनके प्रति उन्होंने कृतज्ञता महसूस की या जतायी, अब नियमित थैरेपी टूल या उपचार पद्धति बनती जा रही है। कैलिफोर्निया यूनिविर्सिटी में मनोविज्ञान की प्रोफेसर राबर्ट एमोंस का भी कहना है कि कृतज्ञता जताने के लिए उन लोगों पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत ज्यादा होती है जो आपसे ज्यादा जुड़े हुए है। ऐसे में सोचें कि उनके बिना जीवन कैसा होता।

प्रेम की बात

मेरा नाम प्रेम लाल है मेरी उम्र 14 साल है मैं जिला खरगोन मध्यप्रदेश का निवासी हूँ। मैं पोलियो से ग्रसित था और चल नहीं पा रहा था मेरे पिता जी ने मुझे कई जगह पर दिखाया पर कहीं से भी सन्तोषपूर्ण जवाब नहीं मिला। मेरे मामाजी की लड़की भी पोलियो से विकलांग थी।

उन्होंने नारायण सेवा संस्थान में ऑपरेशन करवाया और ठीक हो गई। तब मामाजी ने कहा कि तुम भी उदयपुर जाओ और अपने पैर का ऑपरेशन करवा लो वहाँ पर निःशुल्क चिकित्सा व भोजन की सुविधा है।

इस संस्थान में आये और मेरे पैर का निःशुल्क सफल ऑपरेशन हुआ। मैं इस संस्थान का जीवन भर आभारी रहूँगा क्योंकि इस संस्थान ने मुझे दिव्यांगता से मुक्ति दिलाई।

सम्पादकीय

ईश्वर की आराधना के अनेकानेक स्वरूप प्रचलन में है। इनमें एक है जरूरतमंदों की उपयुक्त सेवा । सेवा शब्द यों तो इतना व्यापक है कि प्रत्येक क्रियाकलाप को इसके अंतर्गत परिभाषित किया जा सकता है। परन्तु सेवा का एक प्रभावी रूप है किसी भी जरूरतमंद की सहायता जो उसे तत्काल आवश्यक है।

आज अनेक व्यक्ति अज्ञान पीड़ित हैं, कई लोग रोजगार विहीन हैं, कई स्वास्थ्य से पीड़ित हैं तो कई अन्य परिस्थितियों से। इनमें भी जो रोग से, दिव्यांगता से, निर्धनता से पीड़ित हैं उनको तो तुरंत सहयोग चाहिए ही ।

इस प्रकार के सहयोग के लिए वर्तमान में अनेक संस्थान, अनेक संगठन व अनेक व्यक्ति सेवारत हैं। यह सही है कि पीड़ितों की तुलना में सेवा करने वालों की संख्या अत्यधिक न्यून है, पर बहुत कुछ हो रहा है। इस प्रकार के सेवा कार्यों में प्रमुखतः संसाधनों का भी प्रमुख सहयोग होता है। लेकिन साधनों से भी ज्यादा महत्व है– सेवा के लिए अंतरमन से उठे भावों का। हर एक व्यक्ति के मन में यदि सेवा की भावना जग जाए तो संसाधन तो स्वतः जुटने लगते है। प्राथमिक कार्य है सेवा के विचारों का प्रसारण। जरूरी है सेवा के बीजों का रोपण। यह कार्य किसी वैचारिक अभियान से ही संभव है ।

कुछ काव्यमय

सत्य, दया, करूणा नहीं,
उपजी मन के द्वार।
वो मानव की देह में,
इस धरती पर भार।।
मानव जीवन है सफल,
परहित आये काम।
बाकी तो ढल जायगी,
इस जीवन की शाम।।
जो ईश्वर आदेश का,
पालन करना चाह।
तो विचलित हो मन भला,
सुने किसी की आह।।
जब भी मन में उपजता,
पीड़हरण का भाव।
समझो मन में हो रहा,
प्रभु का आविर्भाव।।
जिसके भी मन में बसे,
सद्गुण अरु सद्भाव।
वो निश्चिंत बना रहे,
पार लगेगी नाव।।

- बरदीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

अपनों से अपनी बात

व्यक्तिगत व सार्वजनिक

भगवान महावीर ने श्रावक के लिए आचार–संहिता दी। उसका एक व्रत है–भोगोपभोग व्रत। इसका अर्थ है, भोग की सीमा करना। संपत्ति कितनी ही हो सकती है, पर वैयक्तिक भोग की सीमा वांछनीय है।

विश्व के धनाढ्य व्यक्ति रोकफेलर की बेटी लंदन गई। वह बाजार में कुछ खरीदना चाहती थी। अनेक फोटोग्राफर साथ में हो गए। वह एक जूते की दुकान पर गई। चप्पल देखे। उनका मूल्य अधिक था। उसने कहा–मैं खरीद नहीं सकती, मूल्य अधिक है। पत्रकार साथ में था। उसने पूछा–'आप तो अरबपति की लाड़ली हैं, फिर पैसे की बात क्यों करती हैं? रोकफेलर का संस्थान लाखों–करोड़ों का दान करता है। इस स्थिति में आपकी बात समझ में नहीं आती।' वह बोली–मैं एक अरबपति की लड़की हूं। व्यापार में करोड़ों रुपये लग सकते हैं, पर हमारा व्यक्तिगत बजट बहुत कम है। हम अपने व्यक्तिगत उपभोग के लिए अधिक खर्च नहीं कर सकते।'

इस घटना के संदर्भ में मुझे भगवान् महावीर के द्वारा निर्धारित श्रावक आचार–संहिता के एक व्रत की स्मृति होती है।

व्रत है भोग–उपभोग की सीमा। भगवान् महावीर का अनन्य श्रावक था आनन्द, करोड़ों का स्वामी। अपार संपदा, विस्तृत व्यवसाय, कुटुम्ब का अधिपति। पर उसका व्यक्तिगत जीवन अत्यंत सीधा और सादगीपूर्ण था। स्वयं के रहन–सहन और खान–पान पर बहुत सीमित व्यय होता था।

– कैलाश 'मानव'

ईश्वर प्रेम

प्रेम पंथ पे पग धरै,
देत ना शीश डराय।
सपने मोह व्यापे नहीं,
ताको जनम नसाय।।

किसी गाँव में एक सज्जन पुरुष रहते थे। वे कथा लेखन एवं वाचन करते थे एक दिन उनके घर पर उनका एक मित्र सपरिवार मिलने आया। दोनों में आत्मिक प्रेम था। कथावाचक मित्र एक दिन भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गजेन्द्र को मगरमच्छ से बचाने की कथा का वाचन कर रहे थे कि किस प्रकार गजेन्द्र नामक हाथी को मगरमच्छ ने पकड़ लिया और फिर कैसे भगवान श्रीकृष्ण गजेन्द्र की पुकार सुनकर तत्काल बिना अस्त्र–शस्त्र के उसे बचाने वहाँ पहुँच गए। जब यह घटना लेखक के मित्र ने सुनी, तो वे भगवान का उपहास करने लगे। कहने लगे स्नेह में ऐसा भी क्या बँधना कि भगवान बिना अस्त्र–शस्त्र लिए ही मगरमच्छ जैसे प्राणी से संघर्ष करने जा पहुँचे। यह तो चतुराई वाली बात नहीं आदि–आदि। लेखक, अपने मित्र द्वारा ईश्वर का उपहास शांत भाव से सुन रहे थे। दोपहर में भोजन के पश्चात् दोनों मित्र घर के बाहर बने कुँए के पास चहलकदमी कर रहे थे। जब लेखक के मित्र की पीठ कुँए की तरफ थी अर्थात् उनका मुँह कुँए के विपरीत दिशा में था, उसी समय लेखक ने एक बड़ा–सा पत्थर लिया और कुँए में डाल दिया। पत्थर गिरने की जोरदार आवाज हुई, तो मित्र ने पीछे मुड़कर देखा, उसी समय लेखक चिल्लाकर बोले –हे मित्र! तुम्हारा पुत्र कुँए में कूद गया। बचाओ! भागो! लेखक की पुकार सुनते ही उनका मित्र कुँए की तरफ भागा और अपने पुत्र को बचाने के लिए कुँए में कूदने लगा। उसी क्षण लेखक ने अपने मित्र की बाँह पकड़ ली और बोले –अरे भाई! कहाँ जा रहे हो?

मित्र ने जवाब दिया – कुँए में, पुत्र को बचाने। लेखक ने कहा–अरे व्यवस्था तो करके जाओ, कुछ रस्सी वगैरह ले लो, अगर ऐसे ही कूद जाओगे तो ऊपर कैसे आओगे और अपने पुत्र को बाहर कैसे निकालोगे?

मित्र ने कहा–अरे! पुत्र मोह में मैं यह सारी बात तो भूल ही गया।

इस पर लेखक ने कहा–जब तुम अपने पुत्र के प्यार में इतने पागल हो गए हो कि तुम्हें यह भी ध्यान नहीं कि तुम अन्दर जाकर बाहर कैसे आओगे, ठीक उसी प्रकार ईश्वर भी प्रेम के वशीभूत होकर अपने भक्त की रक्षा हेतु बिना कुछ लिए, बिना विलम्ब किए, तत्काल दौड़े चले आते हैं। भक्त के स्नेह में ईश्वर भी अपना आपा खो देते हैं।

प्रेम पियाला सो पिये
शीश दक्षिना देय।
लोभी शीश न दे सके,
नाम प्रेम का लेय।।

अर्थात् प्रेम वह वस्तु है, जो सदैव तत्परता दर्शाती है। प्रेम में धैर्य भी है, तत्परता भी है। प्रेम को निभाना आसान नहीं है। प्रेम वह रिश्ता है, जो जितना पुराना होता जाता है, उतना ही अधिक प्रगाढ़ होता जाता है। प्रेम में कभी स्वहित न साधें।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

भारत लौटा तो दक्षिण भारत में किसी संस्था द्वारा आयोजित एक शिविर में भाग लेने गया। कैलाश ने अत्यन्त लगन से शिविर में काम किया, रात भर रोगियों को भर्ती करने में लगा रहा, अगले दिन ऑपरेशन होने वाले थे। कैलाश को संस्था के बारे में जानकारी नहीं थी। उसे आग्रहपूर्वक बुलाया गया तो वे चला गया।

अगले दिन ऑपरेशन हो रहे थे तो उसने सोचा भोजन व्यवस्था में कुछ हाथ बंटा देता हूं, वह भोजनशाला में गया मगर वहां किसी भी तरह की गतिविधि नहीं देख कर हैरान रह गया। उसने किसी से पूछ लिया– शिविर में इतने लोग भर्ती हुए है, उनके लिये भोजन कहां है तो किसी ने बताया कि एक दिन पूर्व की पूड़िया व भोजन सामग्री पड़ी हुई है, वही खिला देंगे। कैलाश को यह सुन कर बहुत बुरा लगा, वह आयोजकों से मिला तो उन्होंने बताया कि रोगी तो एक दिन पहले का भोजन खा लेंगे, बाकी सभी आगन्तुकों के लिये ताजा भोजन आ रहा है। कैलाश को यह सहन नहीं हुआ, उसने विरोध किया तो आयोजकों ने कह दिया– आपको बुरा लग रहा है तो आप ही इनके ताजा खाने की व्यवस्था कर लो। कैलाश ने चुनौती स्वीकार कर ली, तुरन्त आटा वगैरह लाया और ताजा खाना बनवा कर रोगियों को भोजन करवाया।

2005 में ही यूरोपीय देशों की यात्रा की। यह भारतीय यात्रियों के समूह की संचालित यात्रा थी। कैलाश भी इसी में शामिल हो गया, अपने साथ नारायण सेवा की गतिविधियों के पत्रक तथा चित्र ले लिये। यात्रा में सभी शहरों में भारतीय रेस्टोरेन्टों में ही इनके खाने पीने की व्यवस्था होती थी। कैलाश इन रेस्टोरेन्टों के मालिकों या मैनेजरों से 4– 5 मिनट का समय मांगता और अपनी बात बताता। वह सबको कहता दिया जलाने आया हूं , आप संस्था के संरक्षक बन कर इसकी जोत विदेशों में भी प्रज्ज्वलित रख सकते हो। ये लोग चित्रों व साहित्य देखकर प्रभावित हो जाते और संरक्षक बनने की हामी भर देते। कैलाश उनसे स्पष्ट कर देता है कि , आपका पैसा लेने नहीं आया हूं– आपका दिल लेने आया हूं।

अंश-220

सेहत से भरपूर : अंगूर

मौसमी फल के रूप में आजकल अंगूर बाजार में आसानी से उपलब्ध हो रहा है। लेकिन इससे भी ज्यादा आसान है इसे खाना। न तो छीलने का झंझट और न ही बीज निकालने का। आमतौर पर बाजार में दो प्रकार के अंगूर हैं। हल्के हरे रंग के और दूसरे काले रंग के। दोनों ही खाने में स्वादिष्ट और सेहत से भरपूर हैं।

- अंगूर में ग्लूकोज, मैग्नीषियम और पॉलीफिनोल्स नाम के एंटीऑक्सीडेंट जैसे कई पोशक तत्व पाए जाते हैं। जिससे यह टीबी, कैंसर, ब्लड इंफेक्शन जैसी घातक बीमारियों में लाभकारी है।
- दिल की बीमारी के लिए भी अंगूर काफी फायदेमंद है। एक शोध में कहा गया है कि अंगूर हृदय में जम रहे बैड कोलेस्ट्रॉल को कम करता है।
- अगर कब्ज की समस्या है और खुलकर भूख नहीं लगती तो इसमें अंगूर का रस काफी फायदेमंद है। इसके सेवन से कब्ज की समस्या दूर होती है और भूख भी लगती है।
- अंगूर के सेवन से ब्लड प्रेशर की समस्या नहीं होती। किसी को यदि बीपी की समस्या है तो अंगूर खाने से वह कम होगा। क्योंकि अंगूर में मौजूद पोटेशियम की मात्रा रक्त से सोडियम की मात्रा को कम करती है।
- अंगूर का सेवन एलर्जी में भी फायदेमंद है क्योंकि इसमें मौजूद ज्वलनशील विरोधी तत्व शरीर मे एलर्जी को कम करता है।
- आंखों की सेहत के लिए भी अंगूर में मौजूद पोषक तत्व लाजवाब हैं। शोध के अनुसार अंगूर में एंटीऑक्सीडेंट ल्यूटिन और जेएक्सांथिन नामके पोषक तत्व पाए जाते हैं जो आंखों के लिए काफी लाभदायक हैं।

अनुभव अमृतम्

मैं नहीं मेरा नहीं,
यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है,
वह धन किसी का है दिया।।

जो मिला है वो पास रह सकता नहीं। सफेद बाल आ गये। कैलाश 73 साल पूरे हो गये 2 जनवरी 20 को 74 वर्ष में प्रवेश कर लिया। 74 भी पूरे हो जायेंगे, 75 आ जाये गा। तो राजमल जी जैन साहब प्रेम– स्नेह बढ़ता चला गया। अब भाईसाहब के हॉस्पीटल के निर्माण के साथ–साथ प्रेम भी बढ़ गया था। हर रविवार को केम्प में जाता था। रविवार से ही केम्प चालू होता था।

7 दिन का होता था 7 दिन तक रोगियों को रखते थे। शनिवार को डिस्चार्ज कर देते 6 दिन बाद और अगले को दूसरी जगह केम्प लगा देते थे। गाँव में कितना आविष्कार? राजमल जी भाईसाहब बड़े अविष्कारक एक स्टील का पाइप जोड़कर के काउंटर बन जाता था।

इधर पुरुषों का वार्ड, इधर महिलाओं का वार्ड। बीच में काउंटर, पहले दिन प्रसाद में लड्डू बंटना। भैरव जी के भोग लगाना। बहता चला गया। राजमल जी भाईसाहब के साथ जीवन भर दिव्य रिश्ता बना रहा। भैरव फ्री हॉस्पीटल भी बन गया। भैरव फ्री हॉस्पीटल के साथ में आँखों का भी हॉस्पीटल बन गया। डॉ. अजमेर के गोगुन्दा में शिविर लगाया।

किसी बात पर डॉ. साहब नाराज होकर चले गये। मेरे को कहा कैलाश जी उदयपुर से किन्हीं आँखों के डॉक्टर को लाना है। मैंने सब प्रयत्न करें, भाईसाहब को कहा 5:00 बजे 99 प्रतिशत एक डॉ. साहब आ जायेंगे। 1 परसेन्ट भरोसा नहीं है, अब भरोसा भैरव जी पर हैं। अब भरोसा प्रभु पर भरोसा। अब कोई प्रयत्न नहीं करना। निष्प्रयत्न हो जाओ। मैं तो बड़ा चिंतित।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 100 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023